

आदर्श को अपनी मन-बुद्धि का अभिन्न अंग बनायें



डॉ. कु. गंगाधर

एक मूर्तिकार जानता है कि उसने अपने मन में मूर्ति का जो आदर्श सोच रखा है, वह केवल उसकी मिथ्या कल्पना ही नहीं है, बल्कि जो कुछ आगे बनने वाला है, उसी का भविष्य कथन जो संगमरमर के टोस रूप में परिवर्तित होने वाला है, मूर्तिकार के मन में स्थित

आदर्श उसी का पूर्व-प्रतिबिम्ब है।

जब हम किसी वस्तु के लिए इच्छा करना आरम्भ करते हैं, जब हम उसके लिए हृदय में तीव्र आकांक्षा को जन्म देते हैं - तब हम उस वस्तु के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ने लगते हैं और जितनी तीव्रता, जितनी शक्ति तथा जितनी निरन्तरता से हम उस मनोकामना के लिए बुद्धिमत्तायुक्त तथा सतर्कतापूर्ण प्रयत्न करते हैं, उतने ही हम उसे प्राप्त करने के योग्य बनते जाते हैं।

चलते-चलते आदर्श तक पहुंचने के लिए बीच में कई साइड सीन आते हैं, जो रूकावट बनते हैं। लेकिन हमें फोकस करना है अपने आदर्श के प्रति। सारी शक्तियां उस पर केन्द्रित करनी हैं। हमारे कष्टों का कारण यह है कि हम जितना पदार्थों के संसर्ग में रहते हैं, उतना हम अपने आदर्श के संसर्ग में नहीं रहते। हालांकि हम अपने आदर्श को प्राप्त करने की कामना करते हैं। उदाहरणतः, यदि हम अपने यौवन को बनाये रखना चाहते हैं तो हमें सदा अपनी मनःस्थिति यौवन की भावनाओं से परिपूर्ण रखनी चाहिए, सौन्दर्य की भावना से भरपूर रखनी चाहिए, हमें अधिक समय सौन्दर्य अथवा यौवन की मनःस्थिति में रहना चाहिए।

उद्देश्य में जीने, मनःस्थिति को उद्देश्यपूर्ण रखने का लाभ यह होता है कि सारी शारीरिक, मानसिक तथा चारित्रिक त्रुटियां दूर होती हैं। यौवन के उद्देश्य बनाकर उसी के विचारों में मग्न होकर जीने का लाभ यह होता है कि बुढ़ापे की तरफ हमारा ध्यान ही नहीं जाता। हमारे आदर्श से उसका कोई मेल नहीं, क्योंकि वह अपूर्ण है और अपने आदर्श में हम उसे घुसने तक नहीं देते। जहाँ हमारा यौवन का आदर्श विद्यमान है, वहाँ वृद्धत्व का प्रवेश ही नहीं हो सकता।

हमने हमारी कल्पना द्वारा सौन्दर्य का जो मॉडल तैयार किया है वह यौवन से भरपूर है। अलौकिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है। वहाँ क्षीणता, विकृति एवं कुरुपता का लेस मात्र भी नहीं है। अतः आदर्श को मन में संजोकर जीने की कला से आश्चर्यजनक लाभ होता है, क्योंकि उस दशा में निरन्तर मनःचक्षु के सम्मुख हमारी आदर्श मूर्ति ही विराजमान रहती है, जो पूर्णता से समन्वित होती है तथा उसी को पाने के लिए हम प्रयत्नशील रहते हैं। इसी से हमारी आशा बढ़ती है तथा अपने आदर्श को पूर्ण रूप से प्राप्त करने में विश्वास बढ़ता है, अपनी पूर्णता तथा दिव्यता पर हमारा आत्मविश्वास परिवर्तित होता है, क्योंकि हम अपने मनचक्षुओं द्वारा यथार्थ की झलक पाते हैं, जिसे हम स्वभावतः कभी न कभी, कहीं न कहीं पाना चाहते हैं और समझते हैं कि वह यथार्थ, टोस रूप में प्राप्त होकर रहेगा।

हम पदार्थों को जिस रूप या शक्ति में प्राप्त करना चाहते हैं, उस रूप में सोचने से या उसी रूप में उनकी रचना हो ऐसा दृढ़ आग्रह रखने से, जिस रूप में वे बनने चाहिए उसी रूप में वे बनें, इस पर लगातार जोर देते रहने से और साथ ही अपनी पूर्णता का दृढ़तापूर्वक दावा करते रहने से, ऐसा दृढ़ संकल्प और विश्वास करते रहने से, जिस अच्छी वस्तु की हम कामना करते हैं, वह हमने दूर रह ही नहीं सकती, क्योंकि हम सम्पूर्ण श्रेष्ठता से अपने आपको अभिन्न बना चुके हैं। ऐसी मनःस्थिति में हमारा आदर्श और भी निखरे रूप में दिखाई देने लगता है और हमारी जीवन प्रक्रिया उसका निर्माण करके ही रहती है। आप जिस महापुरुष के समान बनना चाहते हैं तो उसका आदर्श निरन्तर अपने सम्मुख रखिए। अपनी कार्यकुशलता, विलक्ष्मता तथा सम्पूर्णता पर निरन्तर अपने ध्यान को एकाग्र रखिए। त्रुटियों का विचार, अपूर्णता का विचार, हीनता का विचार मन से बाहर निकाल दीजिए। जो हम बनना चाहते हैं, पाना चाहते हैं, उसे अपने मन-मस्तिष्क का अभिन्न अंग बनाइये। अपने आदर्श की मूर्ति को इतना अपने मन और बुद्धि से आत्मसात कर दें जहाँ दूसरे किसी के आकर्षण का मार्जिन ही ना हो। जीवन में हर पल उसे निहारते रहिये और संवारते रहिए। बस, फिर तो क्या कहना, जो आप चाहते हैं वो ही आप होते हैं।

संगमयुगी जीवन का आधार - हिम्मत

हम सभी बाबा की मीठी-मीठी अनेक बातें सुनकर बाबा के प्यार में समा जाते हैं। यहाँ पढ़ाई की, सुना और अभी आप जहाँ भी जायेंगे वहाँ ही आपका प्रैक्टिकल पेपर होगा। पेपर देने में तो खुशी होती है क्योंकि पेपर ही क्लास को आगे बढ़ाता है। लेकिन कई पेपर देखकर थोड़ा कन्फ्यूज हो जाते हैं- यह क्यों, यह क्या, क्या अभी तक पेपर आते रहेंगे? लेकिन बाबा ने फाइनल बता दिया है कि पेपर तो अन्त तक आयेंगे और हम अन्त में पास विद ऑनर होंगे। फेल तो होंगे ही नहीं क्योंकि हम बाबा के बच्चे बने हैं तो बाबा मदद करते हैं। सिर्फ हमको अटेन्शन क्या देना है, पेपर कितना भी बड़ा हो लेकिन हिम्मत नहीं हारनी है। थोड़ा भी दिल में क्वेश्चन होता है तो हिम्मत कम हो जाती है। संगमयुग में जीवन का आधार हिम्मत है, हिम्मत से ही बाबा की मदद ले सकते हैं। इसीलिए बाबा कहते हैं हिम्मत बच्चे मरदे बाप। लेकिन कभी-कभी कोई उल्टा कर देते हैं, कहते हैं- मदद बाबा दे तो हिम्मत आवे। तो यह रॉन्ग हो जाता है। पहले है हिम्मत बच्चे फिर है मदद बाप। तो हिम्मत ही वरदान या शक्तियाँ लेने का आधार है, इसीलिए हिम्मत कभी भी नहीं छोड़नी चाहिए। दूसरी बात हमारे साथ बाबा कम्बाइन्ड है तो जब बाबा कम्बाइन्ड है तो हम कमजोर हो नहीं सकते क्योंकि साथी सर्वशक्तिमान है। जब सर्वशक्तिमान बाबा हमारे साथ है तो हम कमजोर भी हिम्मत वाले बन जायेंगे। लेकिन

बाबा ने कहा कि कई बच्चे बाबा के साथ बहुत खेल करते हैं। कोई बात आती है, समस्या या कोई परिस्थिति आती है तो क्या करते हैं, मुँह फेर देते हैं। इसीलिए बाबा का साथ छूट जाता है। लेकिन अगर यह एक बात भी याद रहे कि बाबा हमारे साथ है तो हमको क्या परवाह है! हम माया से क्यों डरें? जब सर्वशक्तिमान हमारे साथ है तो माया उसके आगे क्या है! मरी हुई चींटी, वह भी जिंदा नहीं, मरी हुई है। अपने इतने सालों के अनुभवों में हमने देखा है कि हिम्मत रखने से कई कार्य ऐसे हुए हैं जैसे असम्भव से सम्भव। पेपर आता जरूर है, लेकिन हम घबराये नहीं। हिम्मत का एक पाँव आप उठायें तो बाबा पदम कदम मदद करेगा। हम मास्टर सर्वशक्तिमान हैं, सिर्फ यह निश्चय अपने में होना चाहिए। कई बच्चे कहते हैं - बाबा में तो हमारा पूरा निश्चय है, बाबा के लिए तो कुर्बान जायेंगे, बाबा कहे तो सब कुछ करने के लिए तैयार हैं लेकिन ड्रामा में व ब्राह्मण परिवार में निश्चय बहुत मुश्किल होता है। कहेंगे ब्राह्मण परिवार बड़ा तंग करता है। लेकिन ऐसा नहीं सोचें क्योंकि जब कोई भी चीज को मजबूत बनाया जाता है तो चारों तरफ से फाउण्डेशन पक्का किया जाता है। तो निश्चय को भी चारों तरफ से पक्का करो। एक बाबा, दूसरे अपने में निश्चय, तीसरा ड्रामा में निश्चय, चौथा ब्राह्मण परिवार में निश्चय। जब ये चारों निश्चय पक्के हैं तो हम अचल हैं।



दादी हृदयमोहिनी
पूर्व मुख्य प्रशासिका

हमारे साथ बाबा कम्बाइन्ड है तो जब बाबा कम्बाइन्ड है तो हम कमजोर हो नहीं सकते क्योंकि साथी सर्वशक्तिमान है।

हमारे साथ बाबा कम्बाइन्ड है तो जब बाबा कम्बाइन्ड है तो हम कमजोर हो नहीं सकते क्योंकि साथी सर्वशक्तिमान है। जब सर्वशक्तिमान बाबा हमारे साथ है तो हम कमजोर भी हिम्मत वाले बन जायेंगे। लेकिन

दैहिक वृत्तियों को राखी के पहले राख बनो दो



दादी प्रकाशमणि,
पूर्व मुख्य प्रशासिका

मन्सा की पवित्रता कहाँ तक धारण की है? प्रकृति में चंचलता क्यों होती है? खान-पान में वृत्ति क्यों जाती है? फैशन व कपड़ों आदि में शौक क्यों? देह-अहंकार का नशा क्यों? मन में गुस्सा उठता है क्यों? जब बाबा इशारा देते बच्चे अन्तर्मुख हो जाओ फिर

मन्सा की पवित्रता कहाँ तक धारण की है? प्रकृति में चंचलता क्यों होती है? खान-पान में वृत्ति क्यों जाती है? फैशन व कपड़ों आदि में शौक क्यों? देह-अहंकार का नशा क्यों? मन में गुस्सा उठता है क्यों? जब बाबा इशारा देते बच्चे अन्तर्मुख हो जाओ फिर

कोई भी वृत्ति वाला क्यों नहीं आवे, उसकी वृत्तियां सामने आते ही बदल जायें। दुनिया इस बात को मुश्किल समझती और बाबा हमें इसी बात पर विजय प्राप्त कराते हैं।

भी अन्तर्मुख क्यों नहीं होते? बाबा कहते बच्चे गम्भीर हो जाओ तो भी इशारे को क्यों नहीं समझते? योग में इन्ट्रेस्ट क्यों नहीं? पढ़ाई में इन्ट्रेस्ट क्यों नहीं? इस सब प्रश्नों का जवाब यही है कि अन्दर की मन्सा वृत्ति प्योर नहीं है। अन्दर में प्योरिटी हो तो यह सब बातें समाप्त हो जायेंगी। इसका अपने ऊपर अटेन्शन हो। बाह्यमुखता के कारण ही वृत्ति जाती है। बाह्यमुखता आने से ही संग का रंग लगता है और विकारों के वशीभूत होते हैं। हम सब रक्षक बाप की रक्षा के नीचे बैठे हैं, इसलिए ख्याल चला कि हर एक अपने अन्दर ऐसी विल पॉवर क्यों नहीं रखते हैं? क्या आप पाण्डव ऐसी चैलेन्ज कर सकते हो कि हम पक्के पवित्र योगी, सर्व कर्मेन्द्रियजीत हैं? कोई भी देह की आकर्षण मुझे आकर्षित कर नहीं सकती? दिखाते हैं कि जगदम्बा काली ने अपने पाँव नीचे असुर को दबाया है। यदि थोड़ी भी ऐसी दृष्टि वाला है तो

उसको असुर कहा जाता है। उसे एकदम पाँव नीचे दबाया, उसका नाम है शिवशक्ति। कोई भी वृत्ति वाला क्यों नहीं आवे, उसकी वृत्तियां सामने आते ही बदल जायें। दुनिया इस बात को

कोई भी वृत्ति वाला क्यों नहीं आवे, उसकी वृत्तियां सामने आते ही बदल जायें। दुनिया इस बात को मुश्किल समझती और बाबा हमें इसी बात पर विजय प्राप्त कराते हैं।

मुश्किल समझती और बाबा हमें इसी बात पर विजय प्राप्त कराते हैं। जो बाल ब्रह्मचारी योगी हैं, वह बड़े नाज से कहेंगे, ऐसे बाल ब्रह्मचारियों ने यह रिकार्ड तोड़ा है। तो अपने आपसे पूछो कि क्या हमने कम्पलीट मात्रा में इन विकारी वृत्तियों को जीता है? अगर नहीं तो क्यों? हंसी-मजाक भी क्यों? हम शूद्र - जन्म से मर गये तो फिर हमारे में यह संस्कार क्यों? अभी हमारा जन्म बदल गया, संस्कार बदल गये - तब ब्राह्मण बने। नहीं तो ब्राह्मण ही नहीं कहो। ब्राह्मण माना शीतल काया वाले योगी। जब काम की वृत्ति पूरी नहीं होती है तो गुस्सा निकलता है। तो अभी साइलेन्स का ऐसा वायुमण्डल बनाओ। पवित्रता के बल से विश्व को पावन बनाने की सेवा करो। अब राखी आ रही है तो अपनी सूक्ष्म चेकिंग करो कि हमारी मन्सा, वाचा सूक्ष्म भी कहाँ है? अगर मन्सा वृत्ति भी किसी देहधारी में जाती है तो राखी के पहले उस वृत्ति को राख बना दो।

सिम्पल रहकर सैम्पल बनने के साथ तपस्वीमूर्त बनो



दादी जानकी,
पूर्व मुख्य प्रशासिका

प्यारे बाबा ने हमको अपने ही जैसा तपस्वी मूर्त बनाकर खूबसूरत बना दिया। मुरली में बाबा ने कितना बारी कहते बच्चे मेरे को याद करो। ब्रह्मा बाबा ने हम बच्चों को अपने जैसा तपस्वी मूर्त बनाया। बाबा ने कहा योग अग्नि है तभी तो योग से विकर्म विनाश होते हैं, योग ऐसा लगाओ जो रहे हुए सब विकर्म विनाश हो जाएं। योग अग्नि भी है तो योग शीतल और मीठा भी बनाता है। कभी यह ख्याल नहीं आता है कि हमारे पास यह कमी है, नहीं सब कुछ है। एक बुक लण्डन में तैयार कर रहे हैं "मुझे मरना है तो कैसे,

जीना है तो कैसे?", यह मेरी बहुत खड़े हैं। तो बाबा ने कहा बच्ची, ठहरो अभी सत्यनारायण की कथा चल रही है। उस घड़ी ऐसी भासना आई जैसे मैं सत्य नारायण स्वामी के सामने बैठी हूँ। फिर कहा यहाँ बाजू में आकर बैठो। बाजू में बिठाकर ऐसी करेन्ट

जब कमी मैं पाण्डव भवन में होती हूँ तो वह अनुभव याद आने लगता है और मेरे साथ जो विदेशी बहन-भाई होते हैं मैं उनको कहती हूँ गद्दी पर बैठ करके यह भासना ले लो।

लिखते कॉपीराइट। यह जो बुक है मरने का और जीने का, इसकी भले कॉपी करो, मना नहीं है। तो कोई ऐसा मरने का पुरुषार्थ करता है? मैं सदा ही यह प्रैक्टिस करती हूँ। एक बारी बाबा अपने कमरे में गद्दी पर बैठा था, सामने मैं बैठी थी, बाबा बहुत अच्छा लग रहा था। ऐसा अच्छा लग रहा था जो वहाँ से हटने को भी जी नहीं चाहता था। दीदी ने कहा बाहर

अव्यक्त रहो क्योंकि और कोई काम है ही नहीं, जहाँ भी पाँव रखो तो पाँव धरती पर नहीं हैं। सेवा भले करो पर तपस्या भी करो। याद में रहना है तो कैसे रहना है! हमारा योग ऐसा हो जो और कोई बात याद न आवे। सवेरे की बात शाम को याद नहीं। ऐसा योगयुक्त रहना है जो कोई भी बाजू में बैठे तो खुश होके जाये। यह टाइम बहुत अच्छा है, आपस में मिलके रहना और बाबा की यादों में रहना। जितना हम आपस में मिल करके रहते हैं तो मुस्काराते हैं। कभी-कभी कोई-कोई देशों में हम कहती एक दो को सामने ऐसे देखो और मुस्काराओ, इससे बहुत फायदा हुआ है। पहले मुस्कुराना सहज है उसके लिए सब काम सहज हो जाते हैं। मैं बाबा के सामने हार्मोनियम बजाते गीत गाती थी तो बाबा खुशी में मुस्काराता था। हारमनी माना हार मानी झगड़ा टूटा, सेवा में कभी ज़िद्द और सिद्ध नहीं।